सूरह तौबह – 9

ये सूरत मदनी है

Disclaimer:

Arshad Basheer madani ke urdu books ko Roman English mai lane wale ahbab Mubarakbadi ke mustahiq hai ke unoun ne asan kia urdu reading Na janne Waloun ke liye

الحمد لله

فجزاكم الله خيرا

Note : arshad basheer madani ne Word to Word check nahi kia Kiunke bohut books ko roman Kia gaya un sab ko Check karna asan nahi, time ka commitment deegar Urdu books Aur syllabus par laga huva hai is liye badi mazirat ke sat arz hai ke jahan kahin apko pronunciation ya talaffuz mai Diqqat lage Urdu Janne Waloun se asal Kitab ki taraf rujoo farmaen in sha Allaah in sha Allaaah

Askislampedia ki Team ka shukriya ke Roman mai book lane mai madad faramee

Khas tour se

Riaz bhai , shaikh abdullah Umeri, faheem iqbal , Mushtaq ahmed Aur baz sisters bhi hain jo madad kie Aur kuch brothers bhi madad kie Likin ijazat nahi hai ke unka naam zikr Kia jae Allaah qabool farmae sab ki mahant

****

Ameen

Shukriya

Shoba e nashro ishaat,

Askislampedia

बाज़ अहदाफ

- **इस सूरत का हदफ़ इसके नाम से ही अयान है, यानी तौबह|**

- ये सूरत गज़वा ए तबूक के बाद नाज़िल हुई, यानी नबुव्वत के 22 साल बाद| गोया के ये सूरत दावत व रिसालत के इख्तेतामी कलिमात पर मुश्तमिल है| 52
- इस सूरत में मुआहिदे तोड़ने वाले दुश्मनाने इस्लाम का ज़िकर है, या फिर इस्लाम के भेस में छुपे हुए मुनाफिखों की नखाब कुशाई| 53
- गज़वे की तय्यारी के एलान पर सहाबा रज़िअल्लाहुअन्हुम का रद्दे अमल और जो पीछे रह गए उनको तम्बीह| 54
- बाज़ सहाबा इस सूरह को सूरतुल फज़ेहा, यानी मुनाफिखों की पोल खोलने वाली सूरत कहते थे|
- यही वो सूरत है जो बिस्मिल्लाह के बघैर शुरू होती है| इसकी 14 वजूहात बयान की गयी है, इसमें एक ये है के बिस्मिल्लाह अमान है, जबके ये मुनाफिखीन के सिलसिले में नाज़िल हुयी और उनके लिए अज़ाब का पैघाम लायी, इसलिए बिस्मिल्लाह से शुरू नहीं किया गया (बखौल अली रज़िअल्लाहुअन्हु) 55| और एक सदा वजह ये है के नबी ﷺ ने सहाबा को यहाँ बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम लिखने के लिए नहीं कहा, तो सहाबा ने नहीं लिखा| हम भी इतात में यहाँ बिस्मिल्लाह नहीं पढेंगे| वल्लाहु आलम! और एक वजह ये भी बताई गयी है के अन्फाल और सूरह तौबह का मज़मून एक ही है तो फासला और बिस्मिल्लाह की ज़रुरत नहीं, गोया सूरह अन्फाल ही का दूसरा हिस्सा, सूरह तौबह है| वल्लाहु आलम!
- इस सूरत के 14 नाम ज़िकर किये गए है, उनमे बाज़ ये है: अत तौबह, अल मख्ज़ियह, अल फाज़ेहा, अल कशिफह, अल मुन्कलह, अल अज़ाब, अल मुदम दमह, अल मुखश खशह, अल मुबसरह, अल मुशरदह, अल मैसरह, वल हफिरह| 56

---

52 मज़ीद तफसील के लिए इब्ने कसीर j/4/p101 देखें|
53 मज़ीद तफसील के लिए तफसीर ए खुर्तुबी j/8 देखें|
54 मज़ीद तफसील के लिए तफसीर ए खुर्तुबी j/8/p/72 देखें|
55 मज़ीद तफसील के लिए तफसीर ए खुर्तुबी j/8/p/5 देखें|
56 अत तफसीर अल मौज़ुए: जामिया अस शारजह

बाज़ मौज़ूआत

1. अहद ए नबवी के मुशरिकीन के अहद व पैमान से बरात और उनके मुआमलात की तफसील बताई गयी| (1-6)
2. मुशरिकीन की सिफात और मोमिनो के मुआमले में उनकी तबियत का बयान और दुश्मन से हख ए दिफा के तौर पर खिताल का हुकुम| (7-15)
3. जिहाद पर उभारा गया| (16)
4. मसाजिद को आबाद करना, तामीर करना मुसलमानों का काम है| (17-18)
5. मुशरिकीन के ज़ाम की तरदीद की गयी| (19)
6. मोमिन मुजाहिद की फ़ज़ीलत| (20-22)

7. दीनी दुश्मन से दोस्ती करने की मुमानियत, अगरचे के वो खरीबी रिश्तेदार ही क्यों न हों| (23-24)
8. गज़वये हुनैन के दिन अल्लाह ताला ने मोमिनों की खुसूसी मदद की| (25-27)
9. मस्जिद ए हरम में मुशरिकीन के दुखूल की मुमानियत| (28)
10. दुश्मनों से हख्खे दिफ़ा के तौर पर खिताल की दावत| (29)
11. मुशरिकीन का ग़लत अखीदा के उन्होंने अल्लाह की औलाद बताया| (30-33)
12. यहूदी और ईसाई उलेमा लोगों का माल ग़लत तारीखे से खाते थे| (34-35)
13. अशर ए हुकुम के ताल्लुख से मुशरिकीन का रवय्या| (36-37)
14. रफे ज़ुल्म और हख्खे दिफा के तौर पर जिहाद का हुख्म और अल्लाह के अपने नबी की मदद| (38-41)
15. मसारिफे ज़कात का बयान| (60)
16. मुनाफिखों की सिफात और उनकी सज़ा का तज़किरह, मोमिनीन की सिफात और उनके बदले का तज़किरह| (61-72)
17. कुफ्फार और मुनाफिखीन से जिहाद का हुकुम| (73)
18. मुनाफिखीन की सिफात और उनकी सज़ा का तज़किरह| (74-87)
19. मोमिनो और रसूल ﷺ के जिहाद और उनके जज़ा का तज़किरह| (88-89)
20. जंग में उज़्र पेश करने वालो की खिस्में और उनका हुकुम| (90-93)
21. मुनाफिखीन के झूठ का इन्केशाफ| (94-96)
22. बाज़ दिहात के कुफ्फार और मुनाफिखीन कुफ्फार में बहुत सख्त होते है| (97-98)
23. दिहाती मोमिनों का बयान| (99)
24. अहले मदीना के मोमिनों का बयान| (100)
25. अहले मदीना के मुनाफिखों का बयान| (101-102)
26. सदखा, तौबा और इखलास की फ़ज़ीलत| (103-106)
27. मुनाफिखीन की मस्जिद ए ज़िरार और मोमिनों की मस्जिद ए खुबा का तज़किरह और उन दोनों में फर्ख| (107-110)
28. फाइदा मंद तिजारत और उसकी सिफात का तज़किरह| (111-112)
29. मुशरिकीन के लिए इस्तेघ्फार करने की मुमानियत और इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अपने बाप के लिए इस्तेघ्फार करने का सबब| (113-116)
30. गज्वये तबूक वालों के लिए अल्लाह की तौबा का तज़किरह| (117-119)
31. रसूल ﷺ की जिहाद करने की वजह से अहले मदीना की फ़ज़ीलत और उनके इल्म का तज़किरह| (120-123)
32. जब सूरतें नाज़िल होती है तो मोमिनों का क्या मौखिफ होता है| (124)
33. जब सूरतें नाज़िल होती है तो मुनाफिखों का क्या मौखिफ होता है| (125-127)
34. रसूल ﷺ की बाज़ सिफात का तज़किरह| (128-129)

बाज़ अस्बाख

1. घैर मुस्लिम से ताल्लुखात की शक्लें व ताम्मुल का तरीखे कार|
2. सूरह अन्फाल में एक तालीम ये भी है: "अल इस्लाम उल मुस्लेह" इसी को दौरे हाज़िर की इस्तेलाह में 'peace keeping force' कहा जाता है, यानी इस्लाम में ताखत का इस्तेमाल दिफ़ा, ज़ुल्म के खातमे और अमन के खियाम के लिए है, ना के दहशत गर्दी और मासूमों को सताने के लिए| 57
3. कुफ्फार ए खुरैश ना अहल बन गए, लिहाज़ा उनके replace का वख्त आ चुका और अगर ऐ मुसलमानों, तुम भी अल्लाह और उसके रसूल और अल्लाह की राह में जिद्दो जहद से ज्यादा किसी को महबूब बनाओगे तो फिर तुम्हारे ज़वाल के दिन खरीब है| (9:24)
4. अल्लाह को किसी की ज़रुरत नहीं, ये इस्लाम हर कच्चे पक्के मकान में दाखिल हो कर रहेगा, हम को इस्लाम की ज़रुरत और अल्लाह की मदद की ज़रुरत है|
5. इस सूरत में बताया गया के तौबह का दरवाज़ा खुला है|
6. मुशरिकीन ए मक्का इस सूरत के नाज़िल हो जाने के बाद एक दिन भी मक्का और हरम में नहीं रह सकते और ये हुकुम अली रज़िअल्लाहुअन्हु ने पढ़ कर सुनाया|
7. अगर कोई अहद व पैमान किसी ज़रुरत की बिना पर ग़ैर मुस्लिमीन से किया जाए तो कोई हर्ज नहीं|
8. अगर अहद व पैमान तोड़ दिया जाए तो वख्त का हाकिम एलान ए जंग कर सकता है, और अगर किसी मुसलमान को तकलीफ पहुंची तो उसे खियानत और धोका समझा जाएगा|
9. 4 महीने की मुद्दत तक मुशरिकीन ए मक्का को मक्का में ठहरने की मुहल्लत दी गयी, ये कमज़ोरी नहीं बलके उनकी तौबह कर लेने की मसलिहत की वजह से था|
10. मुसलमान एक दूसरे के भाई है, लिहाज़ा तमाम मुआमलात में नरमी और उख्वत बरखरार रखें, अगर कोई तकलीफ में हो तो उसकी मदद करें|
11. अश'हुरे हुरुम (हुरमत वाले महीने) की ताय्युन की गयी और वो रजब, ज़िल खादह, ज़िल हिज्जाह और मुहर्रम है, लिहाज़ा इन महीनों में जंग की इब्तेदा हराम है|
12. अल्लाह की हिकमत है के वो बन्दों को घल्बा व शिकस्त, खुव्वत व ज़िल्लत से आज़माता है, वरना अगर उनको हमेशा घल्बा व नुसरत मिलती रहे तो वो बघावत और तकब्बुर करेंगे|
13. अहले किताब मुहम्मद ﷺ की रिसालत का इनकार करते है और उज़ैर अलैहिस्सलाम और मसीह अलैहिस्सलाम की उलूहियत का दावा करते है|
14. खिलाफे मसलिहत खज़ानों के जमा करने से मना किया गया, क्यों के मसलिहत ए आम्माह पर उससे नुख्सान लाज़िम आता है|
15. महीनों की गिनती रोज़े अव्वल से अल्लाह के पास 12 महीनों की है|
16. मक्का मुकर्रमा में जिहाद करना हराम है, खुद अल्लाह के रसूल के लिए भी हराम कर दिया गया, इल्ला माशा अल्लाह|
17. जिहाद की मश्रूइयत इसलिए हुई के अल्लाह के कलिमे को बुलंद किया जाए, ज़ुल्म को दफा किया जाए, और कमज़ोरों की मदद की जाए, जिहाद ज़ुल्म और दहशत गरदी के खिलाफ है|
18. जिहाद को तर्क करने पर उम्मत पर बहुत से नुख्सानात लाज़िम आयेंगे, पहला दुश्मन मुसलामानों की ज़मीन पर खाबिज़ होंगे और उनकी तमाम खूबियों को ख़तम कर देंगे और

उनका खून बहा देंगे और खुद मुसलमान जिहाद को छोड़ कर अल्लाह के बड़े सवाब से महरूम हो जायेंगे, फिर दुनिया में ज़ुल्म रोकने का कोई इंतज़ाम ना रहेगा|

19. मुनाफिखीन से अल वला व बरा के ज़ाबेता पर बरात का इज़हार करना ज़रूरी है, औलिया उर रहमान से मुहब्बत और औलिया उस शैतान से इजतेनाब ज़रूरी है|
20. बाज़ अरब के गाव और देहात के लोग कुफ्र और निफाख में बड़े सख्त होते है, क्यों के उनकी तबियत और दिल सख्त होते है और वो इल्म व हिकमत से दूर होते है|
21. मुसलामानों को आपस में एक दूसरे का मददगार होना चाहिए, अगरचे के उनके बाहमी अफकार अलग अलग हो, (साबिखीन के तर्ज़ पर और उनकी हुस्ने सीरत पर चल कर)| अखीदा व दीन में कोई मुदाहनत की कोई गुंजाइश नहीं, लेकिन इज्तेहादी उमूर में इख्तेलाफ को बर्दाश्त करने की आदत डालें ताके मुनकर को हिकमत से हटाया जाए, न के तान व तशनी व तज़लील से|
22. अहले ईमान को बतलाया गया के दुश्मन उन्ही में से है और उनके दरमियान रहते है|
23. घज्वये तबूक से सबख ये मिला के शदाइद के वख्त सब्र करने से लोगों के अंदरुन और उनकी तबियत का पता चलता है|
24. घज्वये तबूक में नफ्स के कुचलने और जिहाद की मशख्खतों को बर्दाश्त करने और सब्र करने और मसाफतें तै करने का सबख मिलता है, अगरचे के नुसरत अल्लाह ही की तरफ से आती है| असबाब का इंतज़ाम अपनी जगह, लेकिन असल मदद और नुसरत तो मुसब्बिब यानी अल्लाह ही से हासिल होती है|

    हर चीज़ मुसब्बिब से मांगो, मन्नत से अदब और खुशामद से मांगो|

    क्यों के ग़ैर के सामने फैलाते हो हाथ बन्दे हो अगर रब के तो रब से मांगो|
25. मुनाफिखीन से डराया गया और उनसे मुहतात रहने को कहा गया और फौज को इन अनासिर से पाक करने को कहा गया|

मुनासिबत / लतैफुत तफसीर

- सूरह अन्फाल सहाबा को तय्यारी का हुकुम देती है| (self development), जबके सूरह तौबह में warning का ज़िकर है, अहले किताब, कुफ्फार ए खुरैश और दीगर जो नबी और सहाबा के दुश्मन थे|
- ये सूरत अन्फाल के बाद है, इसमें एक नुक्ता ये है के अन्फाल में सब से पहले घज्वे का ज़िकर है और तौबह में सब से आखिरी घज्वाये तबूक का ज़िकर|
- ये सूरत उस वख्त नाज़िल हुई जब के मुसलमानाने इस्लाम को जज़ीरए अरब से बाहर सारे आलम में फैलाने के लिए कोशान थे|

हिफ्ज़ व तदब्बुर आयात व हदीस बराए तज़कीर, तज़किया, दावत और इस्लाह

आयत 1: खाल ताला: (----------) (अत तौबह:24)
तरजुमा: आप कह दीजिये के अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे लड़के और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियां और तुम्हारे कुंबे खबीले और तुम्हारे कमाए हुए माल और वो तिजारत जिसकी कमी से तुम डरते हो और वो हवेलियाँ जिन्हें तुम पसंद करते हो अगर ये तुम्हे अल्लाह से और उसके रसूल से और उसकी राह में जिहाद से भी ज़्यादा अज़ीज़ है, तो तुम इंतेज़ार करो के अल्लाह ताला अपना अज़ाब ले आये| अल्लाह ताला फासिखों को हिदायत नहीं देता|

आयत 2: (----------) (अत तौबह:128)
तरजुमा: तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर तशरीफ़ लाये है जो तुम्हारी जिंस से है, जिनको तुम्हारी मुज़िर्रत की बात निहायत गिरांन गुज़रती है, जो तुम्हारी मन्फ़िअत के बड़े खवाहिस मंद रहते है, ईमान वालों के साथ बड़े ही सफीख और मेहरबान है|

हदीस: (----------) (बुखारी:15)
तरजुमा: अनस रज़िअल्लाहुअन्हु से रिवायत है के नबी ए करीम ﷺ ने फ़रमाया, तुम में से कोई शख्स मोमिन नहीं हो सकता जब तक के मै उसके नज़दीक उसके वालिद और उसकी औलाद और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब ना हो जाऊं|